B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – School Management & Leadership
Course – 7 (B)/Unit – 3 (b)
Topic – Source Method (स्रोत पद्धति)
Lecture No: 24

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
(Samastipur)

भूमिका

इतिहास की विषय-वस्तु अतीत की घटनाओं एवं तथ्यों का संकलन मात्र है , जिसमें सत्यान्वेषण निहित होता है। *जिन मौलिक साधनों द्वारा हमें उपलब्ध होते हैं, उन्हें इतिहास के स्रोत कहा जाता है* । स्रोत-विधि छात्रों का परिचय अतीत के वातावरण से कराती है। साथ ही यह इतिहास के मूल साधनों से अवगत कराती है। यह विधि पाठ्य-पुस्तकों के संकुचित क्षेत्र से बाहर ले जाकर विशाल अतीत के जीवन-दर्शन का बोध कराती है तथा अध्ययन में स्वयं अभिप्रेरणा प्रदान करती है। छोटी कक्षाओं में इन स्रोतों का उपयोग प्रसंग व संदर्भ के लिए किया जाता है। उच्च कक्षाओं में इनका उपयोग लिखित कार्य व स्वाध्याय के लिए किया जा सकता है।

स्रोत के प्रकार

स्रोतों का वर्गीकरण **युग** तथा **मौलिकता** के आधार पर किया जाता है। **युग** के आधार पर स्रोत तीन प्रकार के होते हैं -

1. **प्रागैतिहासिक-स्रोत** – प्रागैतिहासिक युग में लेखन कला का आविष्कार नहीं हुआ था। उस समय का इतिहास जानने के लिए अतीत की इमारतों के भग्नावशेष, मनुष्यों के अस्थि-पंजर, भिन्न-भिन्न प्रकार के शस्त्र, औजार, बर्तन तथा जेवरात आदि वस्तुओं पर आधारित रहना पड़ता है , जैसे हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त हुए स्रोत, जिससे सिन्धु-नदी घाटी के इतिहास को तैयार किया गया है।

2. **प्रत्यागैतिहासिक-स्रोत** – प्रत्यागैतिहासिक युग में लेखन कला का प्रयोग होने लगा था। किन्तु इतिहास दन्तकथाओं, अप्सरा-लोक की कहानियों एवं पुराण कथाओं का समान बन गया था। अतः लिखित सामग्री उपलब्ध होने पर भी

उनकी ऐतिहासिक सत्यता में विश्वास नहीं किया जा सकता। रामायण , महाभारत जैसे महाकाव्यों की रचना इसी युग में हुई थी।

3. **ऐतिहासिक-स्रोत** – ऐतिहासिक युग के स्रोत प्रमाणित हैं। गत २००० वर्षों के युग को इस युग के अन्तर्गत माना जाता है। इस युग के मुख्य स्रोत हैं - प्राचीन शिलालेख, ताम्रपट, स्तूपालेख, मन्दिर, लिखित ग्रन्थ जैसे कऔटिल्य कृत अर्थशास्त्र में चन्द्रगुप्त के शासन का विस्तृत वर्णन मिलता है। अन्य स्रोतों में जीवनियाँ, यात्रा-वृतान्त, चित्र, इमारतें या उनके खण्डहर, सड़कें, नहरें, मूद्राएँ तथा सिक्के, अस्त्र-शस्त्र, स्तम्भ, कवच, वस्त्राभूषण-अलंकार आदि सम्मिलित हैं।

मौलिकता के आधार पर स्रोत के दो प्रकार हैं -

1. **मौलिक-स्रोत** – इन्हें प्राथमिक स्रोत भी कहते हैं। इनमें अतीत की मौलिक वस्तुओं को ही शामिल किया जाता है।जैसे - इमारतें या खण्डहर, स्मारक, भग्नावशेष सिक्के, यन्त्र औजार, अस्त्र-शस्त्र, आज्ञापत्र, शिलालेख, संविधान-संधियाँ, न्यायालयों के निर्णय, डायरी, पत्र, वस्त्र, आलेख आदि।

2. **गौण-स्रोत** – इन स्रोतों में उस सामग्री को रखा जाता है जिसका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मौलिक स्रोत से संबंधित होता है। ये स्रोत अपेक्षाकृत कम विश्वसनीय होते हैं., क्योंकि सूचनाओं के स्थानांतरण से शुद्धता में कमी आ जाती है। इस प्रकार के स्रोतों में पाट्य -पुस्तकें, विश्व-शब्द-कोष, जीवन-गाथा, आत्म-कथा आदि सम्मिलित हैं।

<u>स्रोत-शिक्षण विधि के सिद्धांत</u>

इस विधि के मुख्य सिद्धांत निम्नांकित हैं -

1. यह विधि मनोविज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित है, क्योंकि इसमें ज्ञान प्रत्यक्ष निरीक्षण के आधार पर किया जाता है।

2. स्रोत छात्रों में विषय के प्रति अभिरूचि का विकास होता है एवं उन्हें अभिप्रेरणा देते हैं.

3. छात्रों को व्यवहार परिपर्तन के लिए समुचित वातावरण मिलता है।

4. छात्रों की सूझ, कल्पना, सृजनात्मकता, निरीक्षण, निर्णय व तर्क शक्ति का विकास होता है।

5. विषय-वस्तु को वास्तविक तथा मूर्तरूप में प्रस्तुत किया जाता है।